International Journal of Multidisciplinary Research in Social Science
ISSN: 2455-7943

Lkekt'kkL= d tud vkxLr dkEV vkj mudk ;xnku

Mk0 lck rcLlqe

प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग, मुमताज पी0जी0 कालेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

ज्ञान का प्रसार होना सभी समाजों की एक सार्वभौमिक विशेषता है। संसार के किसी भी क्षेत्र में जब ज्ञान की एक विशेष शाखा विकसित होती है, तब उसे अन्य समाजों द्वारा किसी न किसी रूप में अपनाया जाने लगता है। फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैण्ड तथा अमेरिका में जब समाजशास्त्र को एक नये रूप में सामने लाया जाने लगा, तब भारत में भी कुछ समय बाद इसका विकास होना शुरू हो गया।

फ्रांस के महान विचारक आगस्त कॉम्ट (Auguste Compte) को 'आधुनिक समाजशास्त्र का जनक' कहा जाता है। कॉम्ट ही वह पहले विचारक के रूप में सामने आये, जिन्होंने सामाजिक चिन्तक को वैज्ञानिक रूप देकर सामाजिक चिन्तन की एक नयी परम्परा की शुरुआत की। पहले उन्होंने एक ऐसे सामाजिक विज्ञान की कल्पना की जो अन्य सामाजिक विज्ञानों से भिन्न हो और आजाद रहकर सामाजिक व्यवस्था और समाज की प्रगति का अध्ययन कर सके। कॉम्ट ने शुरू में एक ऐसे विज्ञान को 'सामाजिक भौतिकशास्त्र' कहा, परन्तु बाद में उन्होंने सन् 1838 में इसे 'समाजशास्त्र' नाम से सम्बोधित किया।[1] कॉम्ट ने इस विज्ञान की विषय–सामग्री को बताते हुए लिखा है कि ''समाजशासत्र का क्षेत्र, अध्ययन–क्षेत्र विभिन्न सामाजिक विज्ञानों में पायी जाने वाली एकता तथा सामाजिक व्यवस्थाओं को ज्ञात करना है जिससे सामाजिक जीवन को संगठित किया जा सके।'' इसी बात को ध्यान में रखकर उन्होंने समाज के निर्माण में व्यक्ति, परिवार और राज्य आदि सभी को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

सन् 1789 में होने वाली फ्रांस की क्रांति ने आगस्त कॉम्ट के विचारों को अत्यधिक प्रभावित किया। इसी क्रांति के फलस्वरूप यूरोप में बहुत समय से चली आ रही सामन्तवादी व्यवस्था का समापन हो गया और इसी के साथ उस समय के कैथॉलिक चर्च के पादरियों की लौकिक सत्ता समाप्त हो गई। साथ ही कुलीन वर्ग के अधिकार समाप्त हो गये तथा सामान्य जनता की शक्ति बढ़ने लगी। इसी समय में सन् 1771 से 1830 के बीच इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति शुरू हो गई और जिसने यूरोप के विभिन्न देशों में नई दशाएँ पैदा करके बौद्धिक वर्ग के चिन्तन को नई राह दिखाना प्रारम्भ कर दिया। जहाँ उस समय मशीनों द्वारा उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई, वहीं उसका बुरा परिणाम परम्परागत कुटीर उद्योगों के सामने दिखाई देने लगा और बेरोजगारी में वृद्धि होने लगी। इसके साथ ही नगरीय जनसंख्या में अधिकता होने लगी और सामाजिक जीवन के सभी पक्षों में बदलाव दिखलाई देना प्रारम्भ हो गया। इसी के परिणामस्वरूप समाज पूँजीपति, मध्यम तथा मजदूर जैसे तीन मुख्य भागों में बँट गया। फ्रांस की क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति के कारण जब सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन होने लगा, तब समाज के सामने अनेक प्रकार की नई समस्याएँ उत्पन्न होनें लगीं, जिनका

समाधान वैज्ञानिक चिन्तन के द्वारा ही किया जा सकता था। इन्हीं सब समस्याओं को ध्यान में रखकर कॉम्ट ने यह विचार किया कि समाजशास्त्र के रूप में एक ऐसे विज्ञान का विकास करना अनिवार्य है जिसके द्वारा सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक उन्नति का अध्ययन किया जा सके। उन्होंने सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक प्रगति को केवल कल्पना और सिद्धान्तों के द्वारा ही नहीं, बल्कि सामाजिक घटनाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन, परीक्षण और वर्गीकरण करना आवश्यक माना है। कॉम्ट ने इसी विषय में सामाजिक पुनर्निमाण की एक ऐसी योजना की प्रस्तुति की जिसके द्वारा फ्रांस की तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को उन्नति का मार्ग दिखाने में सफल हो सके।

Ekgku fopkjd dkEV dk ifjp; %

समाजशास्त्र के प्रमुख विचारक तथा जनक आगस्त कॉम्ट का जन्म 19 जनवरी सन् 1798 को दक्षिण फ्रांस के मॉन्टपेलियर (Montpellier) नाम के स्थान में कैथॉलिक परिवार में हुआ था। इनका पूरा नाम 'इसीडोर आगस्त मेरी फ्रान्कोयस जेवियर कॉम्ट' (Isidore Auguste Marie Francois Xavire Comte) था। इनके पिता एक कट्टर राजभक्त तथा राजस्व कर–विभाग में एक साधारण अधिकारी थे। इनके परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य थी। कॉम्ट में बचपन से ही दो विशेषताएँ दिखने लगीं थीं। एक तो उसमें प्रखर बौद्धिक क्षमता और दूसरी उनका तत्कालीन सामाजिक तथा राजनीतिक सत्ता में कम विश्वास का होना। बचपन से ही इनकी मेधावी प्रतिभा के कारण इनके सहयोगी और मित्र इनको दार्शनिक कहने लगे थे। कॉम्ट की प्रारम्भिक शिक्षा नगर के मॉन्टपेलियर में ही हुई थी। उसके बाद उन्होंने पेरिस के एक पॉलीटेक्नीक स्कूल में प्रवेश लिया। इनकी प्रतिभा को देखते हुए केवल मित्रों में ही नहीं, बल्कि स्थानीय राजनीतिज्ञों ने भी इनकी प्रशंसा करना शुरू कर दिया। लगभग 14 वर्ष की आयु में ही उन्होंने सामाजिक पुनर्निमाण के विषय का चिन्तन करना आरम्भ कर एक निर्भीक और स्वतंत्र विचारक के रूप में स्थापित कर दिया था।

अपने शिक्षणकाल में ही कॉम्ट फ्रांस के एक प्रमुख विचारक बेन्जामिन फ्रेंकलिन से बहुत अधिक प्रभावित हुए। उनके सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है कि ''मैं आधुनिक सुकरात अर्थात् बेन्जामिन फ्रेंकलिन का अनुकरण करना चाहता हूँ, उनकी बौद्धिक क्षमता का ही नहीं, वरन् उनकी जीवन–पद्धति का।'' 20 वर्ष की आयु में कॉम्ट उस समय के प्रमुख विचारक और दार्शनिक सेन्ट साइमन के सम्पर्क में आये और अपनी क्षमता तथा कार्य–प्रणाली से सेन्ट साइमन को प्रभावित करके उनके निजी सचिव बन गए। कुछ विद्वानों का विचार है कि साइमन ने केवल उन्हीं विचारों को पुष्ट किया है जो बीज रूप में कॉम्ट के मस्तिष्क में थे। इसको स्पष्ट करते हुए कोजर का मत है कि ''यह कहना उचित होगा कि कॉम्ट सेन्ट साइमन से बहुत अधिक प्रभावित थे और एक बड़ी सीमा तक उन्हीं के विचारों के आधार पर अपने विचारों को आगे बढ़ाने में सफल हो सके।''[2] साइमन से कॉम्ट ने दो प्रमुख बातों को अपनाया– पहले यह कि विज्ञानों के बीच एक वस्तुनिष्ट वर्गीकरण होना चाहिए और दूसरी यह कि दर्शन का वास्तविक उद्देश्य सामाजिक वास्तविकताओं को प्रकाश में लाना चाहिए। कॉम्ट एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे जिसमें मनुष्य सच्चरित्र, संयमी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला बन सके।

कॉम्ट ने सन् 1835 में कारोलिन मैसिन (Corolin Massin) के साथ विवाह किया, परन्तु उनका वैवाहिक जीवन कष्टपूर्ण हो गया। इस घटना को भुलाने के लिए उन्होंने अपना अधिक समय अध्ययन और लेखन कार्य में व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया। कॉम्ट ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देना आरम्भ किया और इन्हीं व्याख्यानों के दौरान इन्होंने उस प्रत्यक्षवाद (Psitivism) की रूपरेखा की प्रस्तुत की, जिसे बाद में समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट के सबसे बड़े योगदान के रूप में देखा जाने लगा और सन् 1830 में उनकी महान कृति 'द कोर्स ऑफ पॉजिटिव फिलॉसफी' (The Corse Of Positive Philosophy) का प्रथम खण्ड प्रकाशित हुआ, जो कि छह खण्डों में विभक्त है। कुछ वर्षों के बाद कॉम्ट की एक अन्य महान कृति 'सिस्टम ऑफ पॉजिटिव पोलिटी' (Sistem Of Positive Polity) नामक कृति प्रकाश में आयी, जो चार खण्डों में प्रकाशित हुई, जिसमें मानवता के पुनर्निमाण से सम्बन्धित विचार हैं। इस पुस्तक में कॉम्ट ने सामाजिक पुनर्निमाण की एक अनूठी रूपरेखा प्रस्तुत की है।

सत्यता यह है कि कॉम्ट की रचनाओं और उनके चिन्तन में एक असाधारण प्रतिभा के दर्शन होते हैं। वे अनेक संकटों का सामना करते हुए अपने विचारों पर टिके रहे और कठिन प्रयास के द्वारा समाजशास्त्र जैसे नये विषय को विज्ञाान के रूप देने का प्रयास करते रहे। उनकी रचना–शैली, असाधारण स्मरण–शक्ति और परिपक्व विचारों के कारण उन्हें आलोचकों से अधिक प्रशंसकों का सहयोग प्राप्त हुआ। सन् 5 सितम्बर 1857 को कैंसर की बीमारी से पीड़ित कॉम्ट ने हमेशा के लिए अपनी आँखों को बंद कर लिया, परन्तु उनके विचारों ने उन्हें अमर कर दिया। बार्न्स (Barnes) ने उनके चिन्तन की व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि ''सामाजिक सिद्धान्तों अथवा सांस्कृतिक इतिहास के क्षेत्र में ऐसी कम ही समस्याएँ हैं जिन पर कॉम्ट ने विचार न किया हो।''[3] समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट के योगदान को स्पष्ट करते हुए रेमन्ड एरो (Ramond Aron) ने लिखा है ''आगस्त कॉम्ट को मानवीय और सामाजिक एकता को स्थापित करने वाला प्रथम समाजशास्त्री कहा जा सकता है।''[4]

कॉम्ट ने अपने संघर्षभरे बौद्धिक जीवन में अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना की है। इन ग्रंथों के द्वारा उन्होंने समाजशास्त्र केवल विज्ञान के रूप में स्थापित ही नहीं किया, बल्कि सामाजिक चिन्तन को एक नई राह दिखाने का सफल प्रयास किया है। कुछ महत्वपूर्ण रचनाएँ इस प्रकार हैं–

1. 'A Plan the Scientific Operations Ncessary for Reorganization of Society' यह कॉम्ट की पहली रचना है जो सन् 1822 में प्रकाशित हुई। इसमें कॉम्ट ने सामाजिक पुनर्गठन के लिए वैज्ञानिक योजनाएँ प्रस्तुत करने के साथ ही उन्हें व्यावहारिक रूप देने के लिए महत्वपूर्ण विचार बताए हैं।
2. 'The Corse Of Positive Philosophy' यह कृति सन् 1830 से 1842 के बीच में प्रकाशित हुई। यह छह भागों में विभक्त कृति है। इसमें कॉम्ट ने प्रत्यक्षवाद के रूप में समाजशास्त्र के लिए नई पद्धति को विकसित किया। इसका उद्देश्य सामाजक अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक बनाना था।

3. 'Sistem Of Positive Polity' नामक कृति सन् 1851 से 1854 के बीच प्रकाशित हुई, जो चार खण्डों में विभक्त है। इस पुस्तक में कॉम्ट ने सामाजिक पुनर्निमाण की एक अनूठी रूपरेखा प्रस्तुत की है।
4. 'Catechism of Positivism' नामक पुस्तक सन् 1852 में प्रकाशित हुई। यह कॉम्ट की अंतिम रचना मानी जाती है। इसके अंतर्गत कॉम्ट ने एक ओर यूरोप के समाज में पायी जाने वाली गतिशीलता का विश्लेषण करते हुए जनतंत्र का समर्थन किया, साथ ही दूसरी ओर प्रेम और वैयक्तिक स्वतंत्रता को सामाजिक उन्नति के लिए अनिवार्य बतलाया है।

Lkekt 'kkL= e dkEV dk ;xnku %

प्रत्येक विचारक ज्ञान के क्षेत्र में अपना एक विशेष दृष्टिकोण रखता है और इसी के द्वारा वह हेशा ज्ञान रूपी नयी–नयी शाखाओं को विकसित करता रहा है। जैसे समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट ने जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है उसका मूल्यांकन करना इस दृष्टिकोण से ठीक नहीं है कि वे कितने बड़े वैज्ञानिक हैं, बल्कि उनका मूल्यांकन इस रूप में किया जाना ठीक होगा कि कॉम्ट के प्रयास समाजशास्त्र की स्थापना के प्रारम्भिक स्तर पर कहाँ तक सार्थक और सफल सिद्ध हुए हैं। उनकी समाजशास्त्र की देन को निम्न विचारों तथा सिद्धांतों द्वारा समझाने का प्रयास किया जा सकता है–

1. समाजशास्त्रीय विचारों के इतिहास में कॉम्ट को 'समाजशास्त्र का जनक' माना जाता है। ये वे पहले विद्वान थे जिन्होंने सन् 1838 में सामाजिक व्यवस्था तथा प्रगति का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाले विज्ञान का नाम 'समाजशास्त्र' रखा। इनसे पहले किसी भी विद्वान ने समाजशास्त्र जैसे एक अलग सामाजिक विज्ञान को समझने या महसूस करने का प्रयत्न नहीं किया। अपनी इसी सूझ–बूझ के द्वारा आज भी कॉम्ट को 'समाजशास्त्र का जनक' के रूप में स्वीकार किया जाता है।
2. समाजिक विचारधारा के विषय में कॉम्ट का 'तीन स्तरों का नियम' समाजशास्त्र में एक अनुपम योगदान है। इसका पहला धार्मिक स्तर (Theological Stage), दूसरा तात्विक स्तर (Metaphysical Stage) और तीसरा प्रत्यक्षवादी या वैज्ञानिक स्तर (Positive Stage)। इन तीनों स्तरों के नियम को इसलिए अधिक महत्व दिया गया कि सामाजिक विकास का अध्ययन मानव के बौद्धिक विकास की अवस्थाओं के आधार पर ही किया जा सकता है। इन तीनों स्तरों की प्रकृति को कॉम्ट ने इस प्रकार से स्पष्ट किया है–''हमारे सभी प्रमुख विचार तथा ज्ञान की प्रत्येक शाखा तीन विभिन्न सैद्धांतिक स्तरों में से होकर गुजरती है, जिन्हें हम अर्थशास्त्रीय अथवा काल्पनिक स्तर, तात्विक अथवा अर्मूत स्तर एवं वैज्ञानिक या प्रत्यक्षवादी स्तर कहते हैं।''[5]
3. प्रत्यक्षवाद कॉम्ट के चिन्तन का वह सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है जिसके द्वारा उन्होंने समाजशास्त्रीय अध्ययन को एक वैज्ञानिक रूप देने का सफल प्रयास किया है। इनका यह दृढ़ विश्वास था कि जिस तरह वैज्ञानिक पद्धति से प्राकृतिक विज्ञानों का तेजी से विकास हुआ, उसी प्रकार समाजशास्त्र को भी वैज्ञानिक रूप देने के लिए वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा सामाजिक नियमों की खोज करना आवश्यक है। समाजशास्त्र की वैज्ञानिक

पद्धति अवलोकन, प्रयोग और वर्गीकरण की सहायता से ही विकसित किया जाना सम्भव हो सकेगा। अध्ययन की इसी पद्धति को कॉम्ट ने 'प्रत्यक्षवाद' का नाम दिया। निःसंदेह कॉम्ट की यह एक ऐसी देन है जो आज निरन्तर सफलता के मार्ग पर चल रही है। जे0 एच0 टर्नर के अनुसार– ''कॉम्ट द्वारा प्रत्यक्षवाद के रूप में एक वैज्ञानिक पद्धति के उपयोग का उद्देश्य समाजशास्त्र को एक नये विज्ञान का रूप देना तथा इसे सामाजिक दर्शन से पृथक् करना है।''[6]

4. विभिन्न विज्ञानों में समाजशास्त्र की दशा को बताने के लिए कॉम्ट ने संस्तरण को एक नया रूप देकर सामने रखा है। इस संस्तरण में उन्होंने गणितशास्त्र को सबसे आधारभूत और स्वतंत्र विज्ञान बताते हुए उसके ऊपर क्रमशः खगोलशास्त्र, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र तथा समाजशास्त्र को स्थान दिया है। इसके द्वारा कॉम्ट ने यह बताया है कि विज्ञानों के संस्तरण में जिस विज्ञान का स्थान जितना ऊपर है, वह अपने से पहले के विज्ञान पर उतना ही अधिक निर्भर होता है। इस दृष्टिकोण से भी समाजशास्त्र का कार्य उन नियमों को जानना है जो सामाजिक व्यवस्था तथा प्रगति का आधार है।
5. कॉम्ट के अनुसार समाज की सावयवी अवधारणा को एक नया रूप प्रदान करना ही समाजशास्त्र के लिए महत्वपूर्ण योगदान है। इनसे पूर्व अरस्तू ने सामाजिक संगठन के संदर्भ में समाज की जिस सावयवी अवधारणा की व्याख्या की थी, उसे कॉम्ट ने अधिक व्यावहारिक रूप देने का सफल प्रयास किया। उनके द्वारा यह बताया गया कि समाज का निर्माण सामाजिक चेतना के आधार पर हौता है। इसलिए समाज एक सामूहिक सावयव है। इसी के द्वारा कॉम्ट ने यह भी स्वीकार किया है कि सामाजिक व्यवस्था का वास्तविक आधार व्यक्तियों में कार्यों के सही वितरण तथा प्रयासों के मेल से होता है।
6. समाजशास्त्र के अध्ययन–क्षेत्र का निर्धारण करने वाले कॉम्ट ने अपने से पूर्व विचारकों की तरह मान लिया कि प्रत्येक समाज का विकास कुछ समान नियमों को ध्यान में रखकर किया जाता है। इसके स्पष्टीकरण में कॉम्ट ने समाजशास्त्रीय अध्ययन को दो भागों में रखा गया है– 1. सामाजिक स्थितिकी (Social statics) और 2. सामाजिक गत्यात्मकता (Social dynamics)। सामाजिक स्थितिकी में सामाजिक व्यवस्था और प्रगति को इन नियमों की खोज करना है। जो समाज में व्यवस्था को बनाये रखते हैं तथा दूसरी ओर प्रत्येक समाज में कुछ ऐसे नियम भी मिलते है, जो बदलाव के रूप और विकास के मार्ग को निर्धारित करते हैं। कॉम्ट ने समाजशास्त्र के अध्ययन–क्षेत्र को निर्धारित करने के लिए लिखा है कि–''समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था तथा प्रगति का विज्ञान है।''(Sociology is the science of social order and progress.)
7. कॉम्ट ने प्रत्यक्षवादी पद्धति के अध्ययन पर बल दिया क्योंकि अनेक विचारकों ने इनकी कॉम्ट सामाजिक पुनर्निर्माण की योजना का खण्डन भी किया, परन्तु कॉम्ट ने इसी को आधार मानकर सामाजिक प्रगति की उम्मीद पर विशेष बल दिया।
8. कॉम्ट के योगदान की विविधता समाजशास्त्र के इस तथ्य से भी ज्ञात होती है कि सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के लिए एक वैज्ञानिक पद्धति पर बल देने के बाद भी उन्होंने मानवता के धर्म की अवधारणा का प्रतिपादन किया। कॉम्ट वह पहले समाजशास्त्री थे, जिन्होंने एक वैज्ञानिक होते हुए भी यह स्पष्ट किया कि

मानवता का अंतिम उद्देश्य नैतिक मूल्यों को विकसित करना होता और इसी नैतिकता के कारण व्यक्ति का अहं दूसरों के प्रति समर्पण और सेवा के अधीन हो जाता है। निःसंदेह यही सामाजिक प्रगति और सामाजिक पुनर्निर्माण का सही व सच्चा आधार है।

9. समाजशास्त्र के जनक कॉम्ट ने अपनी पुस्तक 'पॉजिटिव पोलिटी' (Positive Polity) के दूसरे भाग में विभिन्न सिद्धान्तों के माध्यम से सामाजिक प्रकृति को समझाने का प्रयास किया है। यह सिद्धान्त– धर्म के सिद्धान्त, सम्पत्ति के सिद्धान्त, परिवार के सिद्धान्त तथा भाषा के सिद्धान्त माने गए हैं। कॉम्ट के अनुसार धर्म मनुष्यों के बीच एकता उत्पन्न करता है, जबकि सम्पत्ति समाज की क्रियाओं का परिणाम होता है।

fu"d"kZ% समाजशास्त्र के बारे में कॉम्ट के विचारों का मूल्यांकन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि ये वह पहले विचारक थे जिनके द्वारा समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में स्थापित करने का सफल प्रयास किया गया। बोगार्डस के शब्दों में–''वह कॉम्ट सामाजिक चिन्तन के क्षेत्र को विस्तारित करने वाले पहले व्यक्ति थे।''[7] बार्न्स (Barnes) के अनुसार–''कॉम्ट के सामाजिक दर्शन के सभी प्रमुख अध्येयता यह मानते हैं। समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट का मुख्य योगदान किन्हीं नये और मौलिक सामाजिक सिद्धांतों के विकास की तुलना में उनकी समन्वयकारी और संगठन की असाधारण योग्यता में देखने को मिलता है।''[8] बार्न्स ने आगे कहा है कि ''कॉम्ट की प्रमुख रचनाओं का सामान्य अध्ययन करके हम जल्दी ही इस तथ्य से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते कि उपर्युक्त शीर्षकों में उनके जो विचार प्रस्तुत किए गए हैं, समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट की देन उससे कहीं अधिक है।''[9]

lanHk

1. Abraham and Morgan, Sociological Thought, page 12.
2. Coser, L.A. Masters of Sociological Thought, page 28.
3. 'There are few problems in social theory of cultural history upon which he did not touch.' - H. E. Barnes, An Introduction to the History of Sociology, page 84.
4. Ramond Aron, Main Currents in Sociological Thought, page 53.
5. 'Each branch of our knowledge passes successively through three different theoretical conditions, the theological, the metaphysical and the positive stage'- Auguste Comte, -Positive Polity, Vol, IV, Page 9.
6. J.H. Turner : op.cit., page 21.
7. 'He was the first to stake out the territory of Social Thought.'- E.S. Bogardus, The Development of Social Thought, page 243-44.
8. 'It is generally conceded by formost students of Comte's social philosophy that his chief contribution lay in his remarkable capacity for synthesis and organization rather then in the development of new and original social doctrines.'- H. E. Barnes, An Introduction to the History, page 83.
9. H.E. Barnes, Ibid, page 84.